भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर(2023-24)

कक्षा-दसवीं	विभाग: हिंदी	Date of Submission – 22.10.23
प्रश्न बैंक	पतझर में टूटी पत्तियाँ	Note: Pl. file in portfolio

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1 शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग क्यों होता है?

उत्तर-शुदध सोना और गिन्नी का सोना अलग होता है क्योंकि शुद्ध सोने में कोई मिलावट नहीं होती, वहीं गिन्नी के सोने में थोडा-सा ताँबा मिलाया हुआ होता है। इस कारण गिन्नी का सोना अत्यधिक चमकता है और शुद्ध सोने से ज्यादा मजबूत भी होता है।

2. प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट किसे कहते हैं?

उत्तर-प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट उन्हें कहा जाता है, जो शुद्ध आदर्शो में व्यवहारिकता मिला देते हैं ।

3. पाठ के संदर्भ में शुदध आदर्श क्या है?

उत्तर- प्रस्तुत पाठ के सन्दर्भ में शुद्ध आदर्श वह है जिनमें व्यक्ति लाभ-हानि के बारे में न सोचकर सिर्फ अच्छे-बुरे के बारे में सोचता है। शुद्ध आदर्शों में व्यावहारिक्ता के लिए कोई जगह नहीं होती। जिसमें सबकी भलाई छुपी होती है और जो समाज के शाश्वत मूल्यों को बनाए रखने में सक्षम होते है, वही शुद्ध आदर्श कहलाते है।

4. लेखक ने जापानियों के दिमाग में स्पीड़ का इंजन लगने की बात क्यों कही है?

उत्तर-जापान के लोग अमेरिका से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं और इस होड़ में उनका दिमाग सबसे तेज़ रफ्तार से चलता है, इसलिए लेखक ने जापानियों के दिमाग में स्पीड का इंजन लगने की बात कही है।

5. जापानी में चाय पीने की विधि को क्या कहते हैं?

उत्तर- जापानी में चाय पीने की विधि को 'चा-नो-यू" कहते हैं जिसका अर्थ है - टी-सेरेमनी।

6. जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, उस स्थान की क्या विशेषता है?

उत्तर:- जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, वह स्थान पारम्परिक ढंग से सजाया हुआ और शांतिपूर्ण होता है। वहां अत्यंत गरिमापूर्ण और शांतिपूर्ण ढंग से चाय पिलाई जाती है। उस छोटी सी पर्णकटी में एक बार में केवल तीन ही लोग बैठकर चाय पी सकते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

1. शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है?

उत्तर - शुद्ध आदर्शों की तुलना सोने से और व्यवहारिकता की तुलना तांबे से इसलिए की गई है क्योंकि शुद्ध आदर्श सोने के समान होते हैं, जो अपने लचीलेपन के कारण ज्यादा चल नहीं पाते; लेकिन अगर इन्हीं शुद्ध आदर्शों में थोड़ा-सा व्यवहारिकता का तांबा मिला दिया जाए तो उसकी चमक बढ़ जाती है और वह मजबूत भी बन जाता है।

2. चाजीन ने कौनसी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं?

उत्तरः- चाजीन ने मेहमानों का स्वागत करने से लेकर उसे उनके सामने रखने तक की सभी क्रियाएँ बहुत ही शांतिपूर्ण और गरिमापूर्ण ढंग से पूरी की। सबसे पहले उसने प्रेमपूर्वक मेहमानों का स्वागत किया, उन्हें बैठने की जगह दिखाई, यह सेरेमनी एक पर्णकुटी में पूर्ण हुई। आराम से अँगीठी सुलगाना, चायदानी रखना, दूसरे कमरे से चाय के बर्तन लाना, उन्हें तौलिए से पोंछना व चाय को बर्तनों में डालने आदि की सभी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग अर्थात् बड़े ही आराम से, अच्छे व सहज ढंग से की।उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जय-जयवंती के सुर गूँज रहे हो ।

3. टी-सेरेमनी' में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों ?

उत्तरः- टी-सेरेमनी' में सिर्फ तीन आदमियों को प्रवेश दिया जाता था क्योंकि इस विधि में सबसे मुख्य चीज होती है शांति; और उस छोटी-सी पर्णकटी में शांति बनाए रखने के लिए भीड जमा करना और बातें करना वर्जित था। वहाँ व्यक्ति को अपने भविष्यकाल और भूतकाल को भुलाकर कुछ समय शांति से बैठाया जाता था और दुनिया की भीड़ भाड़ से परे कुछ क्षण अपने वर्तमान को जीने का मौका दिया जाता था।

4. चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?

उत्तरः- चाय पीने के बाद लेखक ने महसस किया कि जैसे उनके दिमाग की रफ्तार धीरे-धीरे धीमे पड़ गई है और फिर बिल्कुल बंद हो गई। उनके मन मस्तिष्क से भूतकाल और भविष्यकाल दोनों उड़ गए थे व उनको लगा मानो वे अनंतकाल में जी रहे हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

1. गांधीजी में नेतृत्व की अदभुत क्षमता थी, उदाहरण सहित इस बात की पुष्टि कीजिए।

उत्तरः-गाँधीजी में नेतृत्व की अदभुत क्षमता थी क्योंकि वे दूसरों को आसानी से प्रभावित कर लेते थे। वह सत्य और अहिंसा जैसे आदर्शों में विश्वास रखते थे और इन्हीं आदर्शों के बलबूते पर उन्होंने हमारे देश को आजादी दिलाई। वे अपने जीवन में व्यवहारिकता को भी महत्व देते थे, लेकिन उन्होंने कभी आदर्शों को व्यवहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं दिया बल्कि हमेशा व्यवहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाने की कोशिश की। इससे हमेशा आदर्शों का महत्व ही आगे रहता था।

2. आपके विचार से कौन-से ऐसे मूल्य हैं जो शाश्वत हैं? वर्तमान समय में इन मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः-हमारे विचार से जीवन में ईमानदारी, सत्य, अहिंसा, भाईचारा, परोपकार, जैसे मूल्य शाश्वत है और वर्तमान समय में ये सभी मुल्य महत्वपूर्ण हैं । प्रत्येक राष्ट्र के वैभव और कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है कि उसके देशवासियों में प्रेम और भाईचारे की भावना हो, वे अपने देश, अपने काम और अपने कर्तव्य के प्रति पूरी तरह ईमानदार हो; व एक अच्छे समाज के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि उसके सभी लोगों में परोपकार, त्याग, एकता और भाईचारे की भावना हो।

3. अपने जीवन की किसी घटना का उल्लेख कीजिए जब -

(क) शुद्ध आदर्श से आपको हानि-लाभ हुआ हो।

(ख.) शुदध आदर्श में व्यावहारिकता का पुट देने से लाभ हुआ हो।

उत्तरः-(क.) शुदध आदर्शों को पालन करने के लिए मैंने एक बार अपने ही एक मित्र के दवारा की गई चोरी के बारे में अध्यापक को बता दिया था। इसकी वजह से अध्यापक ने मेरी प्रशंसा की और मुझे इनाम भी दिया; लेक्नि इसकी वजह से उस मित्र ने मेरे भी सारे राज़ खोल दिए, जिनकी वजह से मुझे बहुत अपमानित होना पड़ा था।

(ख). एक बार जब मेरा ही प्रिय मित्र परचे बनाकर परीक्षा में नकल करने वाला था, तब शुदध आदर्शो के बतौर मैं उसके माता- पिता को इससे अवगत करा सकता था; लेकिन इससे हमारी मित्रता पर विपरीत असर पड़ सकता था। इस कारण मैंने ऐसा न करके, उसके सारे परचे एक दिन पहले ही फेंक दिए और उसे समझाया कि उसे अच्छी तरह पढ़ाई करनी चाहिए।

4. 'शुदध सोने में तॉबे की मिलावट या तॉबे में सोना', गांधीजी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात किस तरह झलकती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- प्रस्तृत पाठ में लेखक ने शुद्ध सोने में तॉबे की मिलावट से शुद्ध आदर्शो में व्यवहारिकता की मिलावट को दर्शाया है। यहाँ शुद्ध सोना शुद्ध आदर्शों को दर्शाता है और ताँबा व्यावहारिकता को दर्शाता है। गाँधीजी का मुख्य उद्देश्य था हमारे देश को अंग्रेजों के शासन से मुक्त करवाना और इसके लिए उन्हें संपूर्ण भारतवासियों के साथ की जरूरत थी। एक अकेले या छोटे से समूह में कुछ नहीं कर सकते थे इसलिए उन्होंने सिर्फ शुद्ध आदर्शो पर चलकर व्यवहारिकता की कीमत को पहचाना और उसे भी अपने जीवन में सही से उपयोग किया। लेकिन उन्होंने कभी भी अपने आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं दिया, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शो के स्तर पर उठाने का प्रयास करते थे। इसलिए लोग उन्हें 'प्रैक्टिकल आइड़ियालिस्ट भी कहते थे।

5. 'गिरगिट कहानी में आपने समाज में व्याप्त अवसरानुसार अपने व्यवहार को पल-पल में बदल डालने की एक बानगी देखी। इस पाठ के अंश 'गिन्नी का सोना के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि 'आदर्शवादिता' और 'व्यावहारिकता' इनमें से जीवन में किसका महत्व है?

उत्तर -प्रस्तुत पाठ के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि व्यक्ति के जीवन में व्यवहारिकता के मुकाबले आदर्शवादिता अधिक महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार एक अवसरवादी व्यक्ति सदैव अपना व्यवहार अवसर अनुसार बदल लेता है, उसी प्रकार व्यवहारिकता के माध्यम से भी व्यक्ति अपनी लाभ-हानि का अनुमान लगा लेता है और उसी प्रकार व्यवहार करता है जो उसके लिए लाभकारी हो। व्यावहारिकता से व्यक्ति को हमेशा लाभ होता है, लेकिन फिर भी हमारे समाज में मौजूद शाश्वत मूल्य शुद्ध आदर्शों की ही देन है। अतः: जीवन में अच्छे व उच्च आदर्शों के साथ-साथ सही व्यावहारिकता भी महत्वपूर्ण है।

6. लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- प्रस्तत पाठ में लेखक ने बताया है कि जापानी लोग अमेरिका से प्रतिस्पर्धा करने लगे है। एक महीने का काम एक दिन में पूरा करने की कोशिश करते हैं । उनके दिमाग की रफ्तार भी तेज ही रहती है। इस भागदौड़ भरे जीवन में उनके पास अपने स्वास्थ्य के लिए भी समय नहीं होता और ना ही वे वर्तमान समय में जी पाते हैं । उनका दिमाग व शरीर कंप्यूटर की
तरह बहुत ही अधिक तेजी से चलता है और इस कारण अंत में उनका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है।

7. लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी मैं जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- प्रस्तृत पाठ में लेखक ने कहा है कि वर्तमान ही सत्य है दौर प्रत्येक व्यक्ति को उसी में जीना चाहिए। अक्सर हम या तो गुजरे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते हैं। इस प्रकार हम वर्तमान को छोड़कर, भूतकाल या भविष्यकाल में जीते है; जबकि असल में ये दोनों ही काल मिथ्या है। जब हम भूतकाल के अपने सुखों व दुखों के बारे में सोचते हैं, तब भी हम दुखी होते है क्योंकि हम गुजरे हुए कल को ना ही बदल सकते हैं और ना ही दोबारा जी सकते है। भविष्य की रंगीन कल्पनाएँ भी हमें दुःख ही देती है, क्योॉकि हम अपना वक्त सोचने में ज़ाया कर देते हैं और उन रंगीन सपनों को पाने के लिए कोई प्रयास नहीं कर पाते।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1.समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है।

उतर-इसका आशय है कि समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है, तो वास्तव में यह धरोहर आदर्शवादी लोगों की ही दी हुई है। जैसे-गांधी जी का अहिंसा और सत्याग्रह का संदेश, राजा हरीशचंद्र की सत्यवादिता तथा भगतसिंह की शहादत आदि अनेक हमारे प्रेरणा स्रोत हैं। हम इनके दिखाए रास्ते पर चलते हैं और इनके गुणों को आचरण में लाते हैं।

प्रश्न 2.जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी त्यावहारिक सूझ-बूझ ही आगे आने लगती है।

उतर-जब आदर्श और व्यवहार में से लोग व्यावहारिकता को प्रमुखता देने लगते हैं और आदर्शों को भूल जाते हैं तब आदर्शों पर व्यावहारिकता हावी होने लगती है। "प्रैक्टिकल आइडियालिस्टक" लोगों के जीवन में स्वार्थ व अपनी लाभ-हानि की भावना उजागर हो जाती है। 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसमें आदर्श एवं व्यवहार का संतुलन होता है लेकिन यदि आज के समाज को ध्यान में रखे तो इस शब्द में व्यावहारिकता को इतना महत्त्व दे दिया जाता है कि उसकी आदर्शवादी विचारधारा अदृश्य होकर केवल व्यावहारिकता के रूप में ही दिखाई देने लगती है। आदर्श व्यवहार के उस स्तर पर जाकर अपनी गुणवत्ता खो देता है और धीरे-धीरे आदर्श मूल व्यवहार के हाथों समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 3.हमारे जीका की रफ्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।

उतर-जापान के लोगों के जीवन की गति बहुत अधिक बढ़ गई है इसलिए वहाँ लोग चलते नहीं, बल्कि दौड़ते हैं। कोई बोलता नहीं है, बल्कि जापानी लोग बकते हैं और जब ये अकेले होते हैं, तो स्वयं से ही बड़बड़ाने लगते हैं अर्थात् स्वयं से ही बातें करते रहते हैं।

प्रश्न 4.अभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूंज रहे हों।

उतर-लेखक जब अपने मित्रों के साथ जापान की 'टी-सेरेमनी में गया तो चाजीन ने झुककर उनका स्वागत किया। लेखक को वहाँ का वातावरण बहुत शांतिमय प्रतीत होता है। लेखक देखता है कि वहाँ की सभी क्रियाएँ अत्यंत गरिमापूर्ण ढंग से की गईं। चाजीन द्वारा लेखक और उसके मित्र का स्वागत करना, अँगीठी जलाना, चायदानी रखना, बर्तन लगाना, उन्हें तौलिए से पोंछना, चाय डालना आदि सभी क्रियाएँ मन को भाने वाली थीं। यह देखकर लेखक भाव-विभोर हो गया। वहाँ की गरिमा देखकर लगता था कि जयजयवंती राग का सुर गूंज रहा हो।